

मनसा सेवा - 62

अव्यक्त बापदादा :- (23/02/1997)

» _ » दिल्ली वालों ने भी अच्छा सन्देश दिया। बापदादा को विशेष यह खुशी है कि संगठित रूप में निर्विघ्न होकर कार्य किया, इसकी मुबारक हो। निमित्त तो कोई बनता ही है। बापदादा ने रिजल्ट देखी कि निमित्त बच्चों ने चाहे रात हो, चाहे दिन हो, चाहे खड़े हों, चाहे बैठे हों, लेकिन अथक बन लक्ष्य रखा, उस लक्ष्य की सफलता हुई। **प्राइममिनिस्टर आना, प्रेजीडेंट आना या कोई का भी आना-यह लक्ष्य की सफलता है। जब लक्ष्य एक होता है कि हम सबको अंगुली देनी है और खुशी-खुशी से करना है, अथक बनना है - यह लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप में आया, इसीलिए यह दृढ़ता सफलता की चाबी बन गई।**

» _ » कहाँ भी कार्य करो लेकिन यह लक्ष्य पक्का करके संगठित रूप में करो। एक भी यह नहीं कहे कि हमने कार्य नहीं किया। कोई भी कार्य करे लेकिन सबका संगठित रूप में सहयोग होना चाहिए और सबको खुशी होनी चाहिए कि हम प्रोग्राम कर रहे हैं। ऐसे नहीं कि फलाने कर रहे हैं, हम तो देख रहे हैं, नहीं। हम देखने वाले नहीं हैं, करने वाले हैं। **चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा। छोटे बड़े जो भी हैं, चाहे स्टेज पर कार्य करें, चाहे घर बैठे मन्सा सेवा करें, वाचा सेवा करें, लेकिन सबको सेवा में सहयोग की अंगुली देनी ही है।**

➤➤ सफलता के लिए

» _ » अथक बनना

» _ » दृढ़ संकल्प

» _ » संगठित रूप में सहयोग

- कोई भी कार्य करें सबको संगठित रूप में करनी चाहिए
- सबको खुशी भी होनी चाहिए
- हमारा कार्यक्रम, हम प्रोग्राम कर रहे हैं
- हम देखने वाले हैं, करने वाले हैं
- चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा
- चाहे स्टेज पर, चाहे घर बैठे मनसा सेवा कर रहे हैं, सबको सहयोग की अंगुली देनी ही है

→ किस भाव से सेवा कर रहे हैं उसका महत्व है

» _ » अथक बन सेवा करनी है

→ ब्राह्मण आत्माएं क्यों थक जाते हैं

■ शरीर की थकान

► जो आराम करने से ठीक हो जाती है

■ मन की थकान

► पुरुषार्थ के मार्ग में थक जाती हैं

► अब वो उमंग नहीं रही

▶ पद, प्रतिष्ठा, साधनों, इच्छाओं की दौड़ संसार की आत्माओं को थका देती है

- ▶ योग का चार्ट रखा, नहीं बढ़ा तो छोड़ दिया
- ▶ आत्मिक दृष्टि की कोशिश की, नहीं होती
- ▶ बार-बार अशरीरी नहीं होता, छोड़ो

→ पुरुषार्थ के मार्ग में या आध्यात्मिक थकान के सूक्ष्म कारण -

■ दूसरों को देखना

▶ जो नए आयें हैं वो पुरानों को देखते हैं, उनके अवगुणों को देखते हैं

- ▶ उनमें अशरीरी होने का बहुत काल का अभ्यास है
- ▶ उनमें तपस्या का बीज है, अभी वो अलबेले हो गए हैं
- ▶ लेकिन समय आने पर वो अपने वैरागी और तपस्वी रूप को धारण कर लेंगे और हम पीछे हो जायेंगे

- ▶ किसी को भी नहीं देखना है
- ▶ बाबा के अव्यक्त महावाक्य- 'बाप और बच्चों में एक अंतर है, यदि किसी में 9 गुण है और 1 अवगुण है तो बच्चे उस अवगुण को देखते हैं और यदि किसी में 9 अवगुण हैं और 1 गुण है तो बाप उस 1 गुण, विशेषता को देखते हैं'

▶ अध्यात्म का जगत वो जगत है जिसमें आन्तरिक यात्रा करनी है

▶ जिसको भी हम देखते हैं और चिन्तन करते हैं तो हमारी एनर्जी वहां बहती है

■ नवीनता

- ▶ हमारे देखने का दृष्टिकोण बदलना है
- ▶ वही अमृतवेला, मुरली, वही महावाक्य सब वही रहेंगे पर हमारे दृष्टिकोण में नवीनता लानी है

▶ मुरली पढ़ने, सुनने, लिखने, समझने में नवीनता लानी है..10 साल से जिस स्टाइल में लिख रहें हैं.. इसमें परिवर्तन करना है

- ▶ लिखना, सुनना, पढ़ना कम चिन्तन ज्यादा करना है
- ▶ एक प्वाइंट लेकर उसका विस्तार करना है
- ▶ ज्ञान का मंथन
- ▶ क्लास एक ही है पर हर एक अलग-अलग कक्षा में बैठा है

➡ _ ➡ योगी के लिए योग ही Relaxation है

→ Yog is the sleep that refreshes wisdom

→ स्थूल नींद या किसी स्थान पर घूमने से कभी रिफ्रेश नहीं हो सकते

→ योग के चार्ट को बढ़ाने से ही आत्मा रिफ्रेश हो सकती है
